© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 04 | January – March 2018

भारत -चीन संबंधो का विश्लेषणात्मक अध्यन: मध्यकालीन इतिहास के विशेष सम्बन्ध में

श्रीमती अनुबाला* डॉ.शीश राम बोयट (एसोसिएट प्रोफेसर)
ओ.पी.जे.एस. विश्वविधयलय

चीन और भारत के संबंध बहुत पुराने हैंदोनों देशों के . राजनीतिक रिश्तों में भले ही उतार चढ़ाव आए हों, लेकिन सांस्कृतिक और धार्मिक आदानप्रदान का सिलसिला बहुत ही - .पुराना है लगभग 2000 वर्ष पहले बौद्ध धर्म और दर्शन चीन में भारत से आया. चीन में बौद्ध धर्म भारत से ही आयाआज भी चीन में बौद्ध धर्म . काप्रभावहैमहात्मा गांधी., रवीन्द्रनाथ टैगोर जवाहरलाल नेहरू जैसे लोगों ने बीसवीं सदी में जापान के विरुद्ध चीनी संघर्ष का समर्थन किया.चीनी लोग ये कभी भूल नहीं सकते .

प्रोफ़ेसर ल्यु के विचारों का आधार चीन की युवा पीढ़ी में भी नज़र आता हैबीजिंग की एक . कॉलेज की छात्रा ल्यु मिंग ने रवीन्द्रनाथ को पढ़ा है. चीन का भी भारत पर प्रभाव हैमसलन . केरल राज्य में .सफेद शक्कर को भारत में चीनी कहा जाता है और मूँगफली को चीनिया बादाम .ज भी मछली पकड़ने के चीनी जाल मौजूद हैंआ

आज़ादी के बाद भारत दुनिया का सबसे बड़ा प्रजातंत्र कहलाया जबकि चीन ने समाजवाद की राह पकड़ीलेकिन चीन में जनतंत्र के न होने के आरोप पर चीनी लोग बचाव की मुद्रा अपना . फ़ेसर लुन शी हाइ कहते हैंबीजिंग एशिया प्रशांत संस्थान के उपनिदेशक प्रो.लेते हैं, 'जनतंत्र की इच्छा तो पूरी मानव जाति में मौजूद है चीन में भले ही देर से .मगर लोकतांत्रिक व्यवस्था